रोपण

वर्षाकाल में रोपण करने पर अच्छा परिणाम प्राप्त होता है। तथा रोपण 1मी0 X 1मी0 की स्पेसिंग पर वृक्ष प्रजातियों के नीचे किया जा सकता है।

समयवद्ध कार्यक्रम

क्र.स.	कार्य	वर्ष	माह
	वर्धी प्रवर्धन		
1	स्वस्थ पौधों का चयन	–	कभी भी
2	स्वस्थ पौधों से कटिंग प्राप्त करना/लगाना	प्रथम वर्ष	जुलाई प्रथम सप्ताह
3	रूटेड कटिंग का रूट–ट्रेनरों/पॉलीथीन में प्रत्यारोण	द्वितीय वर्ष	मार्च
4	पौध का रखरखाव	द्वितीय वर्ष	–
5	रोपण	तृतीय वर्ष	जुलाई
	बीज द्वारा पौध तैयार करना		
1	स्वस्थ व रोगमुक्त पौधों से बीज एकत्रीकरण	प्रथम वर्ष	मई प्रथम पक्ष
2	मिस्ट चैम्बर में बीज बुआई	प्रथम वर्ष	मई द्वितीय पक्ष
3	अंकुरित पौधों का प्रत्यारोपण	प्रथम वर्ष	जुलाई
4	पौध का रखरखाव	प्रथम व द्वितीय वर्ष	–
5	रोपण कार्य	द्वितीय वर्ष	जुलाई

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

1- मुख्य वन संरक्षक, जैव विविधता संरक्षण, विकास एवं अनुसंधान
मो0- 9412076135, 05946-234047
2- वन संरक्षक, अनुसंधान वृत्त हल्द्वानी
मो0 9458192126, 0596-235136
3- वन वर्धनिक, पर्वतीय, उत्तराखण्ड, नैनीताल
मो0 09458192184, 05942-236270

अनुसंधान पत्रक 2/2013–14

भेकल

(Principia utilis)

पौध उत्पादन प्राविधि

वन वर्धनिक, उत्तराखण्ड, नैनीताल।
उत्तराखण्ड वानिकी अनुसंधान संस्थान, हल्द्वानी
वन विभाग, उत्तराखण्ड

भेकल

(Princepia utilis)

परिचय

भेकल रोजेसी कुल की एक पर्णपाती एवं काँटेदार झाड़ी है जिसकी ऊँचाई 1.50 मी0 से 3.50 मी0 तक होती है। यह हिमालयी क्षेत्रों में 900 मी0 से 2900 मी0 तक खुले एवं धूप वाले स्थानों, सूखे पर्वत के ढालों, सड़क के किनारे तथा अवनत क्षेत्रों में पाया जाता है। इसकी छाल खुरदरी, हल्की गुलाबी एवं भूरी होती है। इसमें पुष्पण अक्टूबर से प्रारम्भ हो जाता है जो अगले 3–4 माह तक चलता है तथा फल अप्रैल–मई में परिपक्व होते हैं। इसके बीज में लगभग 35 से 40 प्रतिशत तक खाने योग्य तेल पाया जाता है। औषधि के रूप में तेल का प्रयोग जोडों के दर्द आदि रोगों के उपचार में किया जाता है। यह पक्षियों एवं अन्य वन्य जीवों के लिए भोजन व आश्रय प्रदान करता है। मृदा संरक्षण व भूमि विकास के लिए एक महत्वपूर्ण प्रजाति है तथा हिमालयी क्षेत्रों के जन समुदाय की आजीविका का एक मुख्य श्रोत है।

प्रवर्धन प्राविधि

भेकल का प्रवर्धन बीज तथा कटिंग द्वारा किया जा सकता है। सामान्यतः बीज द्वारा वृहद् स्तर पर पौध उत्पादन कार्य सरलता से किया जा सकता है।

वर्धी प्रवर्धन (कटिंग द्वारा पौध तैयार करना)

- स्वस्थ्य पौधों का चयन करें एवं जुलाई प्रथम सप्ताह में 2 वर्ष की शाखाओं की लीडिंग शूट की लगभग 10 सेमी0 लम्बी कटिंग तैयार करें।
- कटिंग रूटैक्स पाउडर से उपचारित कर मिस्ट चैम्बर में बालू+मिट्टी (1:1) में रोपित करें ।
- कटिंग की जड़ प्रस्फुटित होने में लगभग 3 माह का समय लगता है तथा लगभग 35–40 प्रतिशत पौधों में रूटिंग प्राप्त होती है। शीतकाल में कटिंग का प्रत्यारोपण नहीं करना चाहिए।
- जड़ युक्त पौधों का प्रत्यारोपण माह मार्च में 300 सी0सी0 के रुट–ट्रेनर अथवा 9''x 6'' के पॉलीबैग में करना चाहिए। पौटिग मीडियम मिट्टी व वर्मीकम्पोस्ट (2:1) उपयुक्त पाया गया है।
- लगभग 2 वर्ष पश्चात आगामी बर्षात में पौधे रोपण हेतु तैयार हो जाते हैं।

बीज द्वारा पौध तैयार करना

उच्च गुणवत्ता के परिपक्व बीज स्वस्थ व रोग मुक्त पौधों से माह मई के प्रथम पक्ष में एकत्र करते हैं। एकत्रित बीज को शीध्र ही छाया में सुखाकर साफ करते हैं तथा गुनगुने पानी में 12 घंटे भिगाने के उपरांत माह मई के द्वितीय पक्ष में मिस्ट चेम्बर के अन्दर जर्मिनेशन ट्रे में मिट्टी+कम्पोस्ट (2:1) में बुआई करते हैं। बुआई का कार्य लाइन में किया जाना उपयुक्त पाया गया है। 10 से 12 दिनों में बीज में अंकुरण प्रारम्भ हो जाता है तथा इस विधि से लगभग 95 प्रतिशत अंकुरण 35 दिनों में प्राप्त होता है।

पौध प्रत्यारोपण

अंकुरित पौधों का प्रत्यारोपण जुलाई में किया जाना चाहिए, जब उसमें कम से कम 3–4 पत्तियाँ आ जाय। प्रत्यारोपण हेतु पौधों को जर्मीनेशन ट्रे से सावधानीपूर्वक निकालना चाहिए तथा प्रत्यारोपण के समय पौधे को कालर के बजाय पत्ते से पकड़ना चाहिए। प्रत्यारोपण 300 सी0सी0 के रूट–ट्रेनर अथवा 9''x 6'' के पॉलीबैग में शेड हाउस में करने पर अच्छा परिणाम प्राप्त होता है। पॉटिंग मीडियम मिट्टी+वर्मीकम्पोस्ट (2:1) उपयुक्त पाया गया है। अगले वर्ष फरवरी–मार्च में पौधों को खुले स्थान पर रखना चाहिए तथा नियमित रूप से सिंचाई करनी चाहिए। लगभग 13–14 माह में बीज द्वारा उगाये गये पौध रोपण हेतु तैयार हो जाते हैं।